क्रोचे का अभिव्यंजनावाद

डॉ नीलिमा गौड़
हिन्दी विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय

बेनेदेत्तो क्रोचे

- बेनेदेत्तो क्रोचे (25 फ़रवरी 1866 – 20 नवम्बर 1952) इटली के आत्मवादी दार्शनिक थ। उन्होंने अनेकानेक विषयों पर लिखा जिनमें दर्शन, इतिहास, सौन्दर्य शास्त्र आदि प्रमुख हैं। वह उदारवादी विचारक थ। किन्तु उन्होंने मुक्त व्यापार का विरोध किया।

- अभिव्यंजनावाद के प्रवर्तक बेनेदेत्तो क्रोचे मूलतः आत्मवादी दार्शनिक हैं। उनका उद्देश्य साहित्य में आत्मा की अन्तः सत्ता स्थापित करना था। इनसे पूर्व काण्ट ने मन तथा बाह्य जगत् के तादात्म्य और समन्वय का प्रतिपादन करते हुए दृश्य जगत् की उपेक्षा की और हीगेल ने काण्ट की मान्यता स्वीकार करते हुए दृश्य जगत् को भी महत्त्व प्रदान किया। इसके विपरीत क्रोचे ने केवल मानसिक प्रक्रिया को ही महत्त्व दिया है। उनकी दृष्टि में बाह्य उपकरण गौण साधन मात्र हैं। क्रोचे का अभिव्यंजनावाद कला के मूल तत्त्व की खोज का प्रयास है। कला का वास्तविक तत्त्व क्या है अथवा उसकी आत्मा क्या है? इस विषय में क्रोचे ने अपना गम्भीर विवेचन प्रस्तुत किया है, जो सूक्ष्म भी है। क्रोचे के समस्त सौन्दर्य-विवेचन में आत्म-तत्त्व प्रतिष्ठित है। यह आत्म-तत्त्व कलाकार की चेतना है। इस आत्म-तत्त्व को क्रोचे ने आन्तरिक अभिव्यक्ति कहा है, जो इस जगत् में मुख्य रूप से दो प्रकार की प्रतिक्रिया करता है।

अभिव्यंजनावाद

- अभिव्यंजनावाद इटली,जर्मनी और आस्ट्रिया से प्रादुर्भूत प्रधानत: मध्य यूरोप की एक चित्र-मूर्ति-शैली है जिसका प्रयोग साहित्य, नृत्य और सिनेमा के क्षेत्र में भी हुआ है।

- अभिव्यंजनावाद एक कला सिद्धांत है, जिसका संबंध सौंदर्यशास्त्र से है न कि साहित्यिक आलोचना से। क्रोचे की मान्यता है कि कलाकार अपनी कलाकृति में अपने अंतर की अभिव्यक्ति करता है। यह अभिव्यक्ति बिंबात्मक होती है, जिसका स्वरूप उसके हृदय में विद्यमान होता है, वाह्य जगत से उसक कोई संबंध नहीं। वाह्य जगत केवल बिंब निर्माण में सहायक हो सकता है।

क्रोचे का अभिव्यंजनावाद

क्रोचे के अनुसार "अंतःप्रज्ञा के क्षणों में आत्मा की सहजानुभूति ही अभिव्यंजना है"। कला के क्षेत्र में इसे आवाँ गार्द (हिरावल दस्ते) के रूप में जाना जाता है। अभिव्यंजनावाद की मूल संकल्पना है कि कला का अनुभव बिजली की कौंध की तरह होता है, अतः यह शैली वर्णनात्मक अथवा चाक्षुष न होकर विश्लेषणात्मक और आभ्यंतरिक होती है। उस भाववादी (इंप्रेशनिस्टिक) शैली के विपरीत जिसमें कलाकार की अभिरुचि प्रकाश और गति में ही केंद्रित होती है। यहीं तक सीमित न होकर अभिव्यंजनावादी प्रकाश का प्रयोग बाह्म रूप को भेद भीतर का तथ्य प्राप्त कर लेने, आंतरिक सत्य से साक्षात्कार करने और गति के भावप्रक्षेपण आत्मान्वेषण के लिए करता है। वह रूप, रंगादि के विरूपण द्वारा वस्तुओं का स्वाभाविक आकार नष्ट कर अनेक आंतरिक आवेगात्मक सत्य को ढूँढ़ता है। .

क्रोचे का अभिव्यंजना सिद्धांत साहित्य या कला-समीक्षा की कसौटी प्रस्तुत नहीं करता, वरन् यह कला की उत्पत्ति या सृजन-प्रक्रिया का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

वक्रोक्ति सिद्धान्त

- **वक्रोक्ति दो शब्दों 'वक्र' और 'उक्ति' की संधि से निर्मित शब्द है। इसका शाब्दिक अर्थ है- ऐसी उक्ति जो सामान्य से अलग हो। भामह ने वक्रोक्ति को एक अलंकार माना था। उनके परवर्ती कुंतक ने वक्रोक्ति को एक संपूर्ण सिद्धांत के रूप में विकसित कर काव्य के समस्त अंगों को इसमें समाविष्ट कर लिया। इसलिए कुंतक को वक्रोक्ति संप्रदाय का प्रवर्तक आचार्य माना जाता है। .**
- **वक्रोक्ति** वक्रउक्ति, का शाब्दिक अर्थ हुआ विलक्षण कथन। सीधे ढंग से कही जाने वाली बात को जरा तिरछा या घुमा कर कहा जाय, तो उसमें वक्रता आ जाती है।

शकुन्तला से विवाह कौन करेगा ऐसा न कह कर, 'इस रूप को भोगने के लिए न जाने ब्रह्मा ने किसे चुन रखा है?' दुष्यंत के इस कथन में वक्रता आ गई है। इसी प्रकार अनसूया दुष्यंत से यह न पूछ कर कि आप किस देश के हैं, आपका घर कहाँ है, इस प्रकार कहती है 'आर्य ने किस राजवंश को सुशोभित किया है? किस देश की प्रजा को अपने विरह से व्याकुल कर के आप यहाँ पधारे हैं?

'कदमो अज्जेण राएसिणो वंसो अलंकरी अदि'

कदमो वा विरहपज्जुस्सुअजणो किदो देसो।'

इस प्रकार, साधरण उक्ति में विलक्षणता आने से वक्रता जा जाती है। लेकिन, **वक्रोक्ति** में ही काव्य हो और साधारण उक्ति में नहीं, यह मान्यता नितांत भ्रामक है। सरल, साधरण उक्तियों में भी काव्यगुण रहता है, और भरपूर रहता है।

क्रोचे की दृष्टि में कला

- क्रोचे की कलाविषयक धारणा की दो आधारशिला है- अंतप्रज्ञा और अभिव्यंजना। अंग्रेजी के 'इंट्यूशन' शब्द के लिए स्वयंप्रकाश ज्ञान, सहज ज्ञान, सहाजानुभूति, अंत:प्रज्ञा आदि अनेक शब्द प्रयोग हुए हैं।
- अंत:प्रज्ञा के साथ अभिव्यंजना का नित्य संबंध है, अथात् जहां भी अंत:प्रज्ञा होगी, वहां अभिव्यंजना जरूर होगी। यह संभव नहीं है कि हम किसी चीज को जानें और उसे कह न सकें या जिसे कहें, उसे जानें नहीं। कोई भी अंत:प्रज्ञा अभिव्यंजना के बिना या अभिव्यंजना अंत:प्रज्ञा के बिना संभव नहीं है। क्रोचे का सारा सौंदर्य-निरूपण इसी पर आश्रित है।
- '"अंत:प्रज्ञा या आध्यात्मिक अनुभूति कल्पना का विलास नहीं है, बल्कि विश्वसनीय ज्ञान है जितना नहीं, वह प्रत्यक्ष की अपेक्षा कहीं अधिक सत्य और सबल है।"' अंत:प्रज्ञा एकीकरण, अखंड रूप में देखता है। जबकि बुध्दि विभाजन, खंडित रूप में अत: अंत:प्रज्ञा और बुध्दि परस्पर पूरक और सहायक हैं। अत: दोनों के समन्वय से प्राप्त ज्ञान ही वास्तविक, पूर्ण और आदर्श ज्ञान है। अत:प्रज्ञा और अभिव्यंजना का अभेद (संबंध) प्रतिपादित करने के बाद क्रोचे कला के साथ उनका अभेद प्रतिपादित करते है। अंत:प्रज्ञा और अभिव्यंजना में भेद नहीं है, वैसे ही अंत:प्रज्ञा और कला में भेद नहीं हैं। जब अंत:प्रज्ञा स्फुरित होती है तो वह अभिव्यंजना के द्वारा कला में परिणत हो जाती है।

क्रोचे की दृष्टि में कला

- **क्रोचे** की दृष्टि में कला पूर्णतया एक आंतरिक व्यापार है। कलाकार के मानस में जब कोई प्रभाव बिम्ब के रूप में प्रकाशित होता है, बस उसी समय अभिव्यंजना भी हो जाती है। यह व्यापार चित्त की जिस अन्तर्वृत्ति के कारण घटित होता है उसे सहज कहेंगे और इसके द्वारा जिस ज्ञान की उपलब्धि होती है, उसे सहज ज्ञान की संज्ञा देंगे। सहज ज्ञान की निष्पत्ति में बुद्धि और तर्क का कोई सहयोग नहीं रहता है। यह अनायास स्वतः उद्भूत होता है, यह स्वयंभू है।
- सहजानूभूति ही सच्ची अभिव्यंजना है और यही कला का शुद्धरूप है। कलाकार के मानस में प्रभाव का बिम्ब–विधान हुआ कि अभिव्यंजना हुई और कला भी वहीं पर फलवती हो गयी। ऐसी स्थिति में, कला का यह आध्यात्मिक रूप केवल वह कलाकार ही देख सकता है, पाठक, श्रोता या दर्शक कदापि नहीं। कला कलावंत के अन्तर्मानस में अभिव्यक्त होती है और अपना सौन्दर्य उनके अंतःकरण में ही विकीर्ण कर तत्काल विलीन हो जाती है।

क्रोचे की दृष्टि में कला

- किसी ने चाँद या फूल देखा, और कल्पना में उसके प्रभाव का रूपांकन किया कि वह कलाकार हो गया। क्योंकि उसके मानस में सहजानुभूति के द्वारा पूफल के प्रभाव की बिम्बमूलक अभिव्यक्ति हो चुकी है।
- **जैसे, कोई चित्रकार या मूर्तिकार के मन में वह चित्र पहले से रहता है वह केवल छेनी-हथौडे से पत्थर को काट-तराशकर एक-एक भाव उत्कीर्ण कर मूर्ति गढ़ता है अत: वह वास्तविक मूर्ति नहीं हैं, वास्तविक मूर्ति तो मूर्तिकार की मन (अंत:प्रज्ञा) में थी। यह उसका प्रतिभास है। फलत: कुरूप का अर्थ केवल असफल अभिव्यंजना है। सुन्दर में एकता होती है और कुरूप में अनेकता। क्रोचे कलात्मक निर्माण के चार चरण मानते है १. संस्कार २. अभिव्यंजना ३. आनंद ४. भौतिक द्रव्यों ।**

क्रोचे की दृष्टि में कला

- **क्रोचे** के मतानुसार, प्रत्येक व्यक्ति जिसे सहजानुभूति होती है कलाकार है। कलाकार का यह परम अनुग्रह है कि वह अपनी आध्यात्मिक अभिव्यक्ति को शब्द, रेखा, गति, नाद आदि के माध्यम से हम सबों के लिए उसे बाह्य रूप में पुनः अभिव्यक्त करता है। मनुष्य भ्रांतिवश कला में बाह्य रूप को कला ही कह कर पुकारता है। कला का शुद्ध वास्तविक रूप केवल कलाकार के मानस में अभिव्यंजित होता है। कला के बाह्य रूप को, कलाकृति को—कविता, चित्रा, मूर्ति, संगीत को—कला कहना एक औपचारिक प्रयोग है। बाह्य कलाकृति आंतरिक शुद्धकला की एक प्रतीक है। प्रतीक मूल वस्तु की प्रतिनिधि हो सकता है, मूल वस्तु कदापि नहीं। शब्द के माध्यम से लिखित मेघदूत असली कला नहीं है वास्तविक मेघदूत तो कालिदास की कल्पना में रूपायित हो चुका। लिखित मेघदूत कल्पना में अंकित मेघदूत की अनुकृति है। विन्चे, एन्जोलो, रैपफेल, पिकासो आदि चित्राकारों के मूर्ति चित्राों में असली कला नहीं है, शुद्धकला तो उनकी कल्पना में ही अवतरित हुई।

क्रोचे का सौंदर्य-निरूपण

- सौन्दर्य मात्र अभिव्यंजना है। क्रोचे फूल, तितली या इन्द्रधनुष में सुन्दरता की सत्ता नही स्वीकार करते। सुन्दरता किसी वस्तु में नहीं रहती, वह वस्तु के प्रभाव की सफल अभिव्यंजना में रहती है। किसी वस्तु में सुन्दरता द्रष्टा की विशेष मनोदशा के करण प्रकट होती है। क्रोचे ने कलागत सुन्दरता को अभिव्यंजना से भिन्न नहीं माना है। उनके मतानुसार सफल अभिव्यंजना ही सुन्दरता है और असफल अभिव्यंजना कुरूपता।

- कुरूपता के कलागत सौन्दर्य के लिए यह आवश्यक है कि उसमें कुछ कुरूपता भी वर्तमान रहे। कलाकृति में सुन्दर और कुरूप दोनों प्रकार के तत्त्वों के बीच संघर्ष चलता रहता है। सुन्दर कुरूप पर विजय प्राप्त करता है यानी, वैषम्य का विनाष और साम्य का सर्जन होता है। कुरूप तत्त्व अंत में अपने को सुन्दर में विलीन कर लेता है। उसकी अवस्थिति सौन्दर्य की अभिवृद्धि के लिए अनिवार्य है।

क्रोचे का सौंदर्य-निरूपण

जिस प्रकार अंधकार पर विजय प्राप्त करने से प्रकाश की गरिमा निखरती है, उसी प्रकार कुरूप पर विजय प्राप्त कर सुन्दर अपनी श्रीवृद्धि करता है। लेकिन, जहाँ कुरूप अंत तक संघर्षरत रहता है वह सुन्दर के चरणों में नताशिर नहीं होता है, वहाँ मिश्रता या भिन्नता का बोध बना ही रहता है। पूरी अन्विति के बिना अभिव्यक्ति सफल नहीं होगी और सुन्दरता का आस्वादन भी नहीं होगा। इसलिए, सुन्दर का असफल संघर्ष ही कुरूप है। सफल कलाकृति में सुन्दरता की भवानी कुरूपता के महिषासुर पर विजय प्राप्त कर सौम्य स्मृति की किरणें बिखेरती है।

- अभिव्यंजना सदा सफल होती है, क्योंकि असफल अभिव्यंजना अभिव्यंजना नहीं कही जा सकती। सुन्दरता अपने को सदा एकता या अन्विति के रूप में अभिव्यक्त करती है और कुरूपता अपने को अनेक तत्त्वों के बेमेलपन में प्रकट करती है।

- कई तत्त्वों का सामंजस्य सुन्दरता है और उनका वैषम्य कुरूपता।

क्रोचे का सौंदर्य-निरूपण

- कला में पूर्ण कुरूपता की भावना **क्रोचे** का कोई कल्पित आदर्श ही है। क्योंकि, इन्हीं के मतानुसार प्राकृतिक वस्तु न सुन्दर है, न कुरूप ही। तो, सुन्दरता या कुरूपता सहृदय की विशेष चित्त दशा की अनुभूति ही कही जा सकती है। इसलिए, पूर्ण कुरूपता का बोध, यदि वह है, तो, विशेष चित्तदशा में ही संभव है। लेकिन, यह हम जानते हैं कि कोई भी संस्कार तभी तक कुरूप है जब तक वह सहजानुभूति में रूपायित नहीं हुआ है। कुरूप प्रभाव भी अभिव्यंजना में आ कर सुन्दर हो उठता है।

क्रोचे का सौंदर्य-निरूपण

- **क्रोचे** का मत है कि 'सुन्दर कोई पदार्थगत तथ्य नहीं है, यह वस्तुओं में नहीं रहता बल्कि व्यक्ति के क्रिया–व्यापार में, आत्म–शक्ति में वर्तमान रहता है। जीव वैज्ञानिकों की दृष्टि में सौन्दर्य का कोई महत्त्व नहीं। वे किसी पक्षी या फूल का सारा हुलिया बता सकते हैं, लेकिन यह नहीं कह सकते कि सुन्दर क्या है। बिना कल्पना की क्रियाशीलता के प्रकृति का कोई भाग सुन्दर नहीं दिख सकता। कलाकार अपनी लेखनी या तूलिका से प्राकृतिक सौन्दर्य को संशोधित करता रहता है। **क्रोचे** सौन्दर्य को व्यक्ति के मन में उत्पन्न मानते है, क्योंकि वस्तु अपने–आप में सुन्दर नही, वह व्यक्ति की कल्पना या भावना के कारण सुन्दर होती है। इन्द्रधनुष या गुलाब की सुन्दरता सहृदय के मन की अनुभूति है। फूल, तितली, इन्द्रधनुष, चाँदनी आदि को हम औपचारिक रूप से सुन्दर कहते हैं, वास्तव में वे सुन्दर नहीं हैं। हाँ, वे हमारी सौन्दर्य–भावना को उत्तेजित करने वाले जरूर हैं। **क्रोचे** सौन्दर्य को शत–प्रतिशत विषयीगत मानते हैं, विषयगत बिल्कुल नहीं।
- **क्रोचे ने कला, और** सौन्दर्य **पर विस्तार से विचार किया है। उनकी मान्यताओं से सम्पूर्ण** सहमति **भले** ही **न जताई जा सके किन्तु उनकी** विलक्षणता **सन्देह से परे है।**

अभिव्यंजना की अखंडता

क्रोचे के अनुसार, अभिव्यंजना को विभिन्न खंडों या पक्षों में बाँटकर नहीं देखा जा सकता क्योंकि यह एक संपूर्ण, संश्लिष्ट, अखंड इकाई है। कविता को भाषा, भाव, बिंब-विधान, अलंकार आदि में बाँटकर देखना या चित्र को पृष्ठभूमि, अग्रभूमि, रंग, आकृतियों आदि की दृष्टि से विश्लेषित करके देखना कलाकृति के रूप में उसकी समग्रता को खंडित कर देता है। कला इस प्रकार टुकड़ों-टुकड़ों में बँटी हुई नहीं बल्कि एक संपूर्ण इकाई होती है। वैसे भी इस प्रकार का विश्लेषण तभी हो सकता है जब कला बाह्य जगत में अभिव्यक्त हो। वास्तव में तो कला मन में सहजानुभूति के स्तर पर ही पूर्ण हो जाती है व सहजानुभूति खंडों में बँटी हुई नहीं बल्कि मन में एक समग्र प्रभाव के रूप में ही उभरती है।